मृत्युपरांतके शास्त्रोक्त क्रियाकर्म

अनुक्रमणिका

* संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण ७

* भूमिका ११

* आध्यात्मिक परिभाषामें प्रस्तावना १३

१. मृत्युके समय मुखमें नाम होनेका महत्त्व १५

२. मरणासन्न व्यक्तिके लिए कृत्य १७

३. मृत्युसे पूर्वकी सिद्धता २०

४. व्यक्तिकी मृत्युके पश्चात १३ वें दिनतक किए जानेवाले महत्त्वपूर्ण कृत्य २१

५. मृत्युदिनके कुछ कर्मोंका अध्यात्मशास्त्र ४४

६. मृत व्यक्तिद्वारा प्रयुक्त वस्तुओंका क्या करें ? ६३

७. सूतक

८. अस्थिसंचय एवं अस्थिविसर्जन ६६

९. पिंडदान ६९

१०. मृत्युके उपरांत १० वें, १२ वें और १३ वें दिनकी विधियोंका महत्त्व ७३

भूमिका

जन्मसे लेकर मृत्युतकके विविध प्रसंगोंद्वारा, मनुष्यको ईश्वरोन्मुख करने हेतु, हिन्दू धर्ममें विविध धार्मिक संस्कार समाविष्ट किए गए हैं । इनमें अंतिम संस्कार है, मृत्युके उपरांत किया जानेवाला क्रियाकर्म ।

कई बार मृत्युपरांतके क्रियाकर्म केवल धर्मशास्त्रमें बताई गई विधि अथवा परिजनोंके प्रति कर्तव्य-पूर्तिके एक भाग स्वरूप किया जाता है । अधिकांश लोग इनके महत्त्व अथवा अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोणसे अपरिचित होते हैं । किसी कर्मके अध्यात्मशास्त्रीय आधार एवं महत्त्वको समझ लेनेपर व्यक्तिका उसपर विश्वास बढता है और वह उस कर्मको अधिक श्रद्धासे कर पाता है । कर्ताको श्रद्धापूर्वक किए गए कार्यका फल पूर्णरूपसे मिलता है, इस प्रकार श्रद्धाका महत्त्व वर्णित है । मृत्युपरांतके क्रियाकर्मके प्रति शुष्क भाव समाप्त हो और वह श्रद्धापूर्वक हो, इस दृष्टिसे प्रस्तुत लघुग्रंथमें कुछ विधियोंका अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रकाशित किया गया है ।

मृत्युपरांतके क्रियाकर्मको श्रद्धापूर्वक एवं विधिवत् करनेपर मृत व्यक्तिकी लिंगदेह भूलोक अथवा मृत्युलोकमें नहीं अटकती, वह सद्गति प्राप्त कर आगेके लोकोंमें बढ सकती है । पूर्वजोंकी अतृप्तिके कारण, परिजनोंको होनेवाले कष्टों तथा अनिष्ट शक्तियोंद्वारा लिंगदेहके वशीकरणकी संभावना भी अल्प हो जाती है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रंथ पढकर मृत्युपरांतके क्रियाकर्मके महत्त्वको हिन्दू समझें तथा उनकी धर्मश्रद्धा अधिक दृढ हो । – **संकलनकर्ता**